① Date 18.5.20

DIII (H), Paper-III

Lecture No — 35

Dr. Kumari Kavita

Marwari College, Darbhanga

Topic — Scope of Abnormal Psychology

असामान्य व्यक्ति के स्वभाव के समुचित ज्ञान के लिए अचेतन का ज्ञान बहुत ही आवश्यक है। इसलिए अचेतन के स्वरूप, इसके महत्व इत्यादि का अध्ययन किया जाता है। Freud के अनुसार .. "व्यक्ति के व्यवहार पर जितना अचेतन मन का प्रभाव पड़ता है उतना प्रभाव न तो चेतन मन का पड़ता है और न अर्द्धचेतन मन का ही।" वस्तुतः अचेतन मन के कारण ही विभिन्न प्रकार के व्यवहार विकसित हो जाते हैं, जिनको समझना तथा जिनकी व्याख्या करना बड़ा कठिन काम हो जाता है।

असामान्य मनोविज्ञान की विषय-वस्तु का क्षेत्र सचमुच ही बड़ा व्यापक है। इसके अन्तर्गत हम विभिन्न प्रकार के दैनिक भूलों के स्वरूप, कारण इत्यादि का अध्ययन करते हैं। ऐसा लगता है कि ये भूलें अकारण होती हैं, लेकिन Freud ने बतलाया है कि अकारण कुछ भी नहीं होता है। बोलने की भूलें, लिखने की भूलें, पहचानने की भूलें इत्यादि उद्देश्यपूर्ण तथा कारणवश होती हैं। इसप्रकार स्वप्न भी अचेतन मन की ही अभिव्यक्ति (expression) है। हम इसका भी अध्ययन असामान्य मनोविज्ञान के अन्तर्गत करते हैं। चिन्ता-स्वप्न (Anxiety dream) भय स्वप्न (terror dream) आदि कई प्रकार के स्वप्न हैं जिनकी समुचित व्याख्या स्थल-विशेष पर हम करेंगे। यहाँ इतना ही कह देना काफी है कि स्वप्न के

स्वरूप के सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिकों के बीच एकमत नहीं है। मानसिक विकृतियां (mental disorders) भी असामान्य मनोविज्ञान का मुख्य विषय है। मानसिक विकृतियों (जैसे - मनः स्नायुविकृतियों तथा मनोविकृतियों) के लक्षण, कारण और उपचार का विस्तारपूर्वक अध्ययन किया जाता है। इसीप्रकार मानसिक दुर्बलता (mental deficiency) के स्वरूप, कारण और उसके सुधार लाने के उपाय का अध्ययन असामान्य मनोविज्ञान करता है।

इसके अतिरिक्त, लैंगिक विकृतियां (Sexual Perversions), चारित्र विकृतियां (character disorders) इत्यादि का भी अध्ययन असामान्य मनोविज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है।

असामान्य मनोविज्ञान में न केवल मानसिक रोग के लक्षण तथा कारण का अध्ययन होता है, बल्कि उसकी चिकित्सा के ~~अभाव~~ के उपाय भी बतलाए जाते हैं। मानसिक रोग के उपचार की कई विधियां हैं जैसे - मनोविश्लेषण (psycho-analysis), निर्देशन (Suggestion), सम्मोहन (hypnosis), सामूहिक उपचार (group therapy) इत्यादि। मनोवैज्ञानिकों के अपनी-अपनी विधियों की विशेष महत्ता दिखलाई है। वस्तुतः कौन सी विधि उपयुक्त है, वह उस रोग विशेष तथा रोगी के स्वभाव पर निर्भर है।

असामान्य मनोविज्ञान में इस बात का भी अध्ययन किया जाता है कि किसप्रकार मानसिक रोग का प्रभाव मन पर पड़ता है। जिसप्रकार कुछ खास नियमों के पालन करने से व्यक्ति अपने शरीर को स्वस्थ रख सकता

है, इसी प्रकार मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान (mental hygiene) के द्वारा व्यक्ति अपने मन को स्वस्थ रख सकता है- इसके बारे में भी असामान्य मनोविज्ञान विस्तारपूर्वक अध्ययन करता है। इसलिए असामान्य मनोविज्ञान का महत्व दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। कार्ल मेनिंजर (K. Menninger) ने मनोवैज्ञानिक तत्वों की महत्ता पर जोर देते हुए कहा है- "भौतिक अथवा रासायनिक तत्वों की तरह मनोवैज्ञानिक तत्व भी वास्तविक एवं प्रभावशाली हैं।"

~~Historical antecedents of~~

A brief History of Psychopathology

असामान्य मनोविज्ञान की वर्तमान स्वरूप को समझने के लिए उसकी पृष्ठभूमि (background) को जानना जरूरी है। जिससे इसके विकास के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप को जानने में मदद मिलती है। अतः असामान्य मनोविज्ञान के विकासात्मक इतिहास (developmental history) को चार मुख्य युगों में विभाजित किया जा सकता है। वे हैं:—

क) प्राचीन युग (The primitive era)
ख) मध्य युग (The Middle Era)
ग) दैहिक युग (The Somatogenic Era)
घ) मनोजनित युग (The Psychogenic era)
ङ) मनोदैहिक युग (The Psycho-Somatic era)

क) प्राचीन युग (The Primitive era) :— इस युग के लोग अन्धविश्वास, दैवी शक्ति, जादू टोना आदि के पुजारी थे। सभी अच्छे एवं सामान्य व्यवहारों की व्याख्या दैवी शक्ति के आधार पर की जाती थी। इसके विपरीत, सभी विपरीत बुरे एवं अलौकिक (unusual)

व्यवहारों जैसे -- मृत्यु, स्वप्न, पागलपन आदि की व्याख्या प्रेत-शक्ति के आधार पर की जाती थी। अतः सभी मानसिक व्याधियों का कारण प्रेत-शक्ति के आधार पर की जाती थी। अतएव इन व्याधियों के उपचार का एक मात्र उपाय यही था कि प्रेत-शक्ति को शरीर से किसी प्रकार बाहर कर दिया जाय। इसके लिए झाड़-फूंक, जादू-टोना आदि की शरण ली जाती थी। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि प्रारम्भिक युग में मानसिक व्याधियों अथवा विकृतियों की व्याख्या जादू टोना के आधार पर की जाती थी और यह धारणा यूनान के दार्शनिकों तथा रोम के चिकित्सकों के बीच भी सैकड़ों वर्षों तक प्रचलित रही।

परन्तु इम्पेडोक्लीज (Empedocles) तथा हिप्पोक्रेट्स (Hippocrates) ने इस मत का खंडन किया। उन्होंने दैवी शक्ति अथवा प्रेत शक्ति को मानसिक व्याधियों के आधार पर स्वीकार नहीं किया और बताया कि इसका कारण मस्तिष्क में उत्पन्न विकार हो सकता है। यद्यपि उन्होंने मानसिक व्याधियों और उनकी चिकित्सा करने में एक नयी धारणा प्रस्तुत की जो बहुत हद तक वैज्ञानिकता को छूती है, तथापि इसे अन्धविश्वास से अछूता कहना मुश्किल है, क्योंकि उस समय भी जादू-टोना किसी न किसी रूप में प्रचलित थे। हाँ इसाई धर्म के आगमन ने इस धारणा को समाप्त कर दिया। प्रेत शक्ति की जगह धार्मिक अन्धविश्वास ने ले ली। इन दिनों असामान्यता को ईश्वरीय दण्ड या शैतानिक हरकत समझा जाता था। असामान्यता के उपचार का एकमात्र उपाय पादरियों को खुश करके ईश्वर को प्रसन्न करना तथा पिशाच को निकाल भगाना था।

To be continued Kumari Kavita